भूमिका

स्वास्थ्य समाज का एक महत्वपूर्ण पहलू रहा है। फिर चाहे वह समाज ग्रामीण हो, शहरी हो या आदिवासी हो। क्योंकि एक स्वस्थ्य व्यक्ति ही स्वस्थ्य समाज का निर्माण कर सकता है, प्रत्येक व्यक्ति की अपनी-अपनी आवश्यकताएं होती है चाहे वह स्त्री हो या पुरुष हो और जिसकी पुर्तता समाज में स्थापित संस्थायों से होती है। संस्था चाहे औपचारिक हो या अनौपचारिक हो इन दोनों के सहयोग से एक स्वस्थ्य समाज की स्थापना होती है। इसलिए स्वास्थ्य को एक अनमोल संपत्ति माना जाता है क्योंकि मनुष्य के जीवन में उसकी खुशियों से ज्यादा महत्वपूर्ण किसी अन्य तत्व की कल्पना करना कठिन है। मनुष्य जीवन में स्वास्थ्य के महत्व को इसी तहर स्वीकारते हुए उसे राज्य सूचि में डाला गया है। क्योंकि राज्य का मुख्य दायित्व यही है कि सार्वजानिक स्वास्थ्य सेवाओं तक सबकी पहुँच हो तथा भुगतान असमर्थता के कारण किसी को भी स्वास्थ्य सेवाओं से वंचित ना रहना पड़े।

एक स्वस्थ, सभ्य व सुसंस्कृत राष्ट्र के लिए महिलाओं का स्वास्थ्य एक अहम भूमिका है, क्योंकि किसी भी परिवार की डोर महिला के हाथ में होती है। महिलाओं के कन्धों पर माँ, बेटी, बहन तथा पत्नी आदि जिम्मेदारियां होती है। इसलिए महिलाओं के स्वास्थ्य का प्रभाव प्रत्यक्ष एवं अप्रत्यक्ष रूप से संपूर्ण परिवार के स्वास्थ्य पर पड़ता है। और एक स्वस्थ्य परिवार से ही स्वस्थ्य समाज की संरचना की जा सकती है। इसी कारण आज स्वास्थ्य संबंधित विभिन्न विषय अध्ययन का केंद्रबिंदु बन रहे है। और प्रस्तुत शोध में भी इसी दिशा में किया गया एक प्रयास है। अत: परिवार, समाज व देश के समग्र व संतुलित विकास में महिलाओं के स्वास्थ्य सेवा में अहम भूमिका है।

इस अध्ययन के अंतर्गत स्त्री स्वास्थ्य एवं प्रजनन स्वास्थ्य में हो रहें परिवर्तनों का विश्लेषण किया गया है। वर्तमान में स्त्री स्वास्थ्य एवं प्रजनन स्वास्थ्य को महत्वपूर्ण मानते हुए एक स्वस्थ्य समाज के निर्माण हेतु प्रयास जारी है। जिसमें तकनिकी प्रक्रिया महत्वपूर्ण भूमिका निभा रही है। इन्हीं प्रभावों ने भारतीय समाज को प्रभावित किया गया है।

इस लघु शोध को चार अध्यायों में विभाजित किया गया है। प्रथम अध्याय में स्त्री स्वास्थ्य एवं प्रजनन स्वास्थ्य के प्रश्न के बारे में बताया गया है। भारत में स्त्री स्वास्थ्य स्वास्थ्य की स्थिति, प्रजनन स्वास्थ्य और प्रजनन स्वास्थ्य के अधिकारों के बारे में बताया गया है।

द्वितीय अध्याय में प्रजनन स्वाथ्य को प्रभावित करने वाले विभिन्न कारणों का विश्लेषण किया गया है। जैसे सामाजिक और आर्थिक कारक, जनांनिकी और स्वास्थ्य संबंधित कारक आदि। इस अध्याय के अंतर्गत परिवार का प्रकार,जाती का स्तर,धर्म और प्रजननता,आदर्श परिवारों में लिंग की संरचना, बच्चों की इच्छीत संख्या में विचार-विमर्श, दो से अधिक बच्चों की चाहत का कारण आदि सामाजिक कारकों का विश्लेषण किया गया है। और आर्थिक कारकों में सिर्फ परिवार के मासिक आय का विश्लेषण किया गया है। स्त्री की शिक्षा एवं पति की शिक्षा विश्लेषण किया गया है। इनमें जनांनिकी कारकों का भी अध्ययन किया गया है। इसके अंतर्गत स्त्रियों की वर्तमान आयु,शिशु जन्म में अन्तराल और बाल मृत्यु के कारकों का विश्लेषण किया गया है।

तृतीय अध्याय में वर्धा शहर में प्रजनन स्वास्थ्य की स्थिति का वर्णन किया गया है। स्वास्थ्य से संबंधित योजनाओं के बारे में लोगो के अनुभव जाने और उनकी प्रतिक्रियाओं का विश्लेषण किया गया है। संकलित तथ्यों के विश्लेषण से प्राप्त निष्कर्ष का वर्णन किया गया है। साथ ही यह जानने की कोशिश कि गई है की प्रजनन स्वास्थ्य संबंधित महिलाएं कितनी सचेत है।

चतुर्थ अध्याय में सरकार द्वारा चलाई गई योजना के बारे में बताया है। साथ ही सावंगी मेघे वर्धा अस्पताल में प्राप्त कुछ गुणात्मक तथ्यों के माध्यम से संस्था की केस स्टडी की गई है। केस स्टडी के माध्यम से लोगों की प्रतिक्रिया जानने का प्रयास किया है।